जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डीडीहाट पिथौरागढ़

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की चौथी वर्षगांठ के चतुर्थ दिवस के प्रकरण सांस्कृतिक दिवस कार्यक्रम की आख्या

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट में दिनांक 25/07/2024 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चौथी वर्षगांठ के चतुर्थ दिवस को **सांस्कृतिक दिवस** के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डायट श्री भाष्करानन्द पाण्डेय, डा0 गोविन्द सिंह धपोला, डा0 ममता खोलिया, श्री चन्द्रशेखर मखौलिया, श्री जितेन्द्र बहादुर मिश्र, श्री गोकर्ण राम लोहिया, श्री पुनीत प्रकाश जोशी तथा डी0एल0एड0 तृतीय सेमेस्टर के सभी प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक दिवस कार्यक्रम का शुभारम्भ प्राचार्य द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

कार्यक्रम का संचालन नियोजन एवं प्रबंधन विभाग की प्रभारी डा0 ममता खोलिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डा0 ममता खोलिया द्वारा संस्कृति का अर्थ–संस्कृति के प्रकार, महत्व, विविधता ,संस्कृति की आवश्यकता, संरक्षण, प्रचार प्रसार आदि पर चर्चा की गयी। इसके बाद उनके द्वारा वंदना के लिए प्रशिक्षुओं का आमंत्रित किया गया। प्रशिक्षुओं द्वारा संस्कृत वंदना " या कुन्देन्दुतुषारहार धवला " का गायन किया गया।

वन्दना के पश्चात डा0 ममता खोलिया द्वारा मांगल गीत/शकुन आंखर के विषय में बताया गया कि मांगल गीत विशेष शुभ अवसरों जैसे विवाह, बच्चे का जन्म, नामकरण संस्कार,जनेऊ संस्कार,मुंडन संस्कार,विवाह आदि मांगलिक कार्यक्रमों को शुरू करने से पहले गाये जाने वाले स्थानीय गीत हैं। जिसमें भगवान गणेश, विष्णु, सूर्य,चन्द्रमा और पंचनाम आदि कई देवताओं को याद किया जाता है।

इसके बाद संचालिका महोदया द्वारा प्रशिक्षुओं को मांगल गीत के लिए आमंत्रित किया गया। नूतन खोलिया ,पूजा ,लक्षिका वर्मा, प्रतिभा कोठारी ,वंदना,रिंकू ,तनजा जोशी ,प्रशिक्षुओं द्वारा " दैणा होया खोली का गणेशा रे तथा दे द्यावा दे द्यावा मेरा बरमा जी" मांगल गीत गाया गया। कार्यक्रम को आगे बढाते हुए डा0 ममता खोलिया द्वारा भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को सूची में शामिल उत्तराखण्ड के चमोली जिले के सांस्कृतिक उत्सव रम्माण के विषय में विस्तार से बताया गया। इसके बाद सभी प्रशिक्षुओं द्वारा सदन वार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गयी।

- **रमन सदन द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम–**

प्रशिक्षु भावना विश्वकर्मा द्वारा संस्कृति क्या है, इसकी विशेषताएं, महत्व, सांस्कृतिक एकीकरण,उत्तराखण्ड की संस्कृति के अन्तर्गत भाषा, वेशभूषा, पारम्परिक आभूषण, व्यंजन, लोक नृत्य, वाद्य यंत्र, प्रमुख मेले, प्रमुख त्यौहार तथा अंत में अमूर्त ऐतिहासिक विरासत रम्माण के विषय में पी.पी.टी. के द्वारा विस्तृत जानकरी प्रदान की गयी। जिससे सदस्यों की उत्तराखण्ड की संस्कृति के बारे में समझ विकसित हुई।

- **चाणक्य सदन द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम–**

  प्रशिक्षु कल्पना , वंदना कोठियाल, निशांत मिश्रा , हितेश गहतोड़ी द्वारा उत्तराखण्ड के विभिन्न लोक गीतों हे नंदा हे गौरा पर सुन्दर नृत्य प्रस्तुतिकरण किया गया। प्रशिक्षु कल्पना , युक्तामुखी, निशांत मिश्रा, हितेश गहतोड़ी द्वारा विभिन्न राज्यों की संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए " रंगीलो भारो ढोलना " राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी एवं हरियाणा राज्यों के लोक नृत्यों को प्रस्तुत किया गया।

- **कुर्मांचल सदन द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम–**

  प्रशिक्षु जूली राणा, रिंकू, प्रताप सिंह , रेखा गैड़ा द्वारा ऐण/पहेलियों (स्थानीय खेल) का प्रस्तुतिकरण किया गया। जिसमें कुमाउनी, गढवाली तथा थारू भाषाओं में पहेलियां पूछी गयी। जिससे सभा में उपस्थित समस्त सदस्यों का मनोरंजन हुआ, साथ ही उनके भाषा ज्ञान एवं संज्ञानात्मक ज्ञान में वृद्धि हुई।

- **विवेकानन्द सदन द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम–**

  प्रशिक्षु प्रतिभा कोठारी , कल्पना,चेतना गोस्वामी ,रोहित धामी ,कमल कार्की,डिगर कोरंगा,अभिषेक डांगी ,जिनेन्द्र कुमार द्वारा " जय हो कुमाऊं ,जय हो गढ़वाला " एवं " उत्तराखण्ड मेरी मातृभूमि " लोकगीत प्रस्तुतीकरण किया गया।

- **कलाम सदन द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम–**

  प्रशिक्षु प्रदीप पाठक ,उदय नौटियाल , लक्षिका वर्मा ,नेहा परिहार, दीपक परिहार ,जितेन्द्र नाथ ,हर्षल कुमार ,वैभव भट्ट द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की कठिनाई, संघर्ष, सामाजिक अस्वीकृति से लेकर सामाजिक सहभागिता में उनका योगदान नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। सदन के द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बालकों की व्यथा व्यक्त करते हुए सुन्दर कविता का वाचन किया गया।

  अंत में सभी सदनों के प्रशिक्षुओं कमल कार्की,जितेन्द्र कुमार ,जितेन्द्र नाथ, हर्षल , रोहित धामी , वैभव भट्ट , अभिषेक डांगी द्वारा छोलिया नृत्य का शानदार प्रस्तुतीकरण किया गया।

डा0ममता खोलिया द्वारा समावेशित शिक्षा के महत्व पर चर्चा करते हुए बताया गया कि दिव्यांग बच्चे सारे समाज की जिम्मेदारी होते हैं उन्हें सामान्य बच्चों के साथ पढ़ाने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है तथा वे समाज के साथ बेहतर तरीके से समायोजित हो पाते हैं ,अन्य बच्चों में उनके प्रति तदनुभूति की भावना जागृत होने से वे उनको अपने से अलग महसूस नहीं करते हैं।

- **वेदान्त सदन द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम–**

  सदन के सदस्यों द्वारा उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति पर छपेली नृत्य एवं जोड़ गाये गये।

कार्यक्रम में सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति के बाद डा0 ममता खोलिया ने भारत सरकार के श्लोगन **अतुल्य भारत** पर चर्चा करने के साथ इस विषय पर चिन्तन व्यक्त किया गया कि आज हम अपनी संस्कृति से दूर भाग रहे हैं जबकि विदेशी हमारी संस्कृति को अपना रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संस्कृति की स्थिति, महत्व, आवश्यकता तथा संरक्षण सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की गयी।

कार्यक्रम के अंत में डा. खोलिया ने प्राचार्य डायट को मंच पर आमंत्रित किया। डायट प्राचार्य द्वारा समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण हेतु प्रशिक्षओं के कार्यों की सराहना की तथा उनके द्वारा बताया गया कि शिक्षा का गहरा सम्बन्ध संस्कृति से है, संस्कृति ही मनुष्य का निर्माण करती है इसके साथ ही रामलीला का उदाहरण देकर राम के गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करने के विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के अंत में श्रीदेव सुमन जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर कार्यक्रम समापन की घोषणा करते हुए वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया।